दिल का द्वार खोल

वार्षिक शुल्कः ३५/- रुपये



ol. 2 No. 9 September, 2008



साधु वासवानी

मिशन की आस्था

साधु वासवानी मिशन इस शाश्वत सत्य पर बड़ी ही गहन आस्था रखता है कि, ''इस चराचर जगत की हर रचना में, चाहे वह सजीव हो या निर्जीव, उस परमपिता की ही चेतना प्रवाहित होती है।''

मिशन का विश्वास है कि, हमारे जीवन को आध्यात्मिक स्तर पर ऊँचा उठाने के लिए संकीर्तन (सामूहिक भजन कीर्तन), प्रार्थना, ध्यान, परमार्थ अर्थात सबके प्रति दया व करुणा तथा दूसरों के लिए जीवन जीना अनिवार्य है। इस संसार में कोई भी पराया नहीं है... हम सब का उद्‌गम एक ही परम चेतना से हुआ है।

यह पृष्ठ साधु वासवानीजी के
एक भक्त की शुभ कामनाओं के साथ प्रस्तुत है।

संपादकीय

इस संसार की आत्मा आँसुओं और मुस्कान के मध्य रचित है। इनकी अपनी कोई भाषा नहीं है,और न ही ये किसी भाषा के मोहताज हैं। यह सारा ब्रह्मांड इन्हीं दो तरंगों के बीच झूलते हुए, अपने अस्तित्व से संघर्ष करता है। मानव जीवन एक दिलचस्प, विविधरंगी,विराट कैनवस की तरह है। वह अपनी भावनाओं के प्रतिबिंब इन पर अंकित करता रहता है, और हर समय उन्हें नए रंगों से सजा कर आत्मिक सुख की अनुभूति करता है। अपने अंतर के सौंदर्य को प्रकट करने के लिए वह संगीत को भी अपना माध्यम बनाता है...क्योंकि यह सारी सृष्टि एक अलौकिक दिव्य संगीत की लय पर ही हमेशा गतिमान रहती है। लगता है इस सारी सृष्टि का ताना-बाना संगीत के धागों से ही बुना गया है। हमारे जीवन की हर क्रिया-जैसे हँसना-रोना, जीना-मरना, साँस लेना-छोड़ना सब कुछ संगीत की लय पर संचारित है। हमारे सारे रीति-रिवाज, पूजा-आराधना, लोकगीत और नृत्य सभी में संगीत गुँथा हुआ है। शब्दों के सागर, जहाँ हमारी अभिव्यक्ति को व्यक्त करने में चूक जाते हैं, वहाँ संगीत सहायक बन जाता है... और जहाँ ये दोनों हार जाते हैं वहाँ मौन दृष्टि सब कुछ एक ही पल में कह देती है।

दिल का द्वार खोल

(आत्म ज्ञान, आत्मिक उन्नति तथा आत्म बोध के लिए मासिक पत्रिका)

वार्षिक शुल्क :	**आजीवन शुल्क :**
भारत में : ३५/- रुपये	भारत में : १०००/- रुपये
विदेश में :	विदेश में :
सामुद्रिक डाक : $ ५.०० या ३.५० £	सामुद्रिक डाक : $ १२५
हवाई डाक : $ १०.०० या ५.०० £	हवाई डाक : $ २५०

मैनेजर
दिल का द्वार खोल
१०, साधु वासवानी पथ,
पुणे - ४११ ००१. (भारत)
कृपया अपने सभी डी.डी. ''साधु वासवानी मिशन'' के नाम से भेजें।

सितम्बर, २००८

अंक २०

इस अंक में

३. राधा की उत्कंठा

५. गुरु अमरदास

९. माता के तीन आभूषण

१२. ऋषि तर्पण दिवस

नियमित स्तंभ

१५. सत्संग प्रवचन - ॐ गं. गणपतये नमः

१९. प्रेरक प्रसंग

२०. बाल वाटिका

२२. भक्तों के सवाल-दादा के जवाब

२३. हँसी के गुब्बारे

२४. रसोई

२५. स्वास्थ्य

२६. आधुनिक हलचल

२७. साहित्य मंथन

२८. प्रसार कार्यक्रम

३२. नूरी वाणी

विशेष

२९. दादा जशन के ९० वें जन्मदिवस के जशन की झलकियाँ

साधु वासवानी मिशन तथा दादा जे.पी. वासवानी के
कार्यक्रमों और यात्राओं की अधिक जानकारी के लिए कृपया आप हमारी वेबसाईट सेवा का उपयोग करें
http://www.sadhuvaswani.org

राधा की उत्कंठा

साधु. टी. एल. वासवानी



राधा और कृष्ण का प्रेम एक ऐसा आत्मिक प्रेम है, जिसकी तुलना असंभव है। इस अलौकिक और पवित्र दिव्य प्रेम में मन और प्राणों का अद्भुत संगम है। यह दिव्य प्रेम रस ही राधा और कृष्ण को अमरता प्रदान करता है। सदियों तक इनकी महान प्रेम गाथा कवियों, लेखकों और प्रेमियों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बनी रहेगी।

राधा और कृष्ण एक दिन साथ बैठे थे तो राधा ने कृष्ण से पूछाः ''यह मुरली सदैव तुम्हारे अधरों पर क्यों सजी रहती है? तुम इसे इतना ज्यादा निकट क्यों रखते हो?''

कृष्ण : ''प्रिये! जरा इस मुरली को गौर से देखो... इसने अपने शरीर पर कितने छिद्र बनवाने की पीड़ा झेली है। मैं इन्हीं छिद्रों से साँस ग्रहण करता हूँ... तभी यह दिव्य संगीत जन्म लेता है, जिसकी ध्वनि से संपूर्ण प्रकृति झूमने लगती है।

इस बाँसुरी की तरह कितने लोग हैं, जो मेरे लिए अपने शरीर को छिद्रमय बना लें? अपना शरीर मुझे समर्पित कर दें? यह तो सूली पर चढ़ने जैसी साधना है। समर्पण और त्याग की भावना है। ऐसी समर्पित निश्छल साधना कौन कर सकता है?''

बाँसुरी का यह निःशब्द त्याग एक आह्वान है उन भक्तों के लिए, जो प्रभु को पाना चाहते हैं। धनी लोग स्वर्ण का संचय तो करते हैं, परंतु उनका हृदय संकुचित हो जाता है। वे धन को ईश्वर से बड़ा मानने लगते हैं। बौद्धिक लोगों के पास पुस्तकीय ज्ञान और एक विलक्षण मस्तिष्क होता है, परंतु उनमें अंतर्दृष्टि और भावना का अभाव होता है। उनका ज़ान आत्मा की ज्योति से रहित होता है।

कृष्ण की बाँसुरी ने किन लोगों को गोकुल और वृंदावन में दीवाना बनाया? वहाँ के भोले-भाले ग्वालों , सहज प्रेम से भरी गोपियों और सीधे सादे किसानों को। उनकी बाँसुरी से तथाकथित विद्वान और पंडित मोहित नहीं हुए। वे निर्धनों

और दलितों के आराध्य थे।

जिसने भी कृष्ण की भक्ति की, मीरा की तरह राजमहल को त्याग दिया... सारे ऐश्वर्य और भोगों को त्याग कर चैतन्य की तरह सड़कों पर झूमने लगे दर्शन और ज्ञान से परे जाकर ही कृष्ण की भक्ति हो सकती है। स्वयं को भूल कर उन्हें पाना होता है। कहते हैं...

प्रेम गली अति सांकरी, जामे दोऊ न समाय।

जब स्व का भाव मिटेगा तभी उस परमपिता की प्राप्ति होगी।

कृष्ण के प्रेम रस में डूबी हुई एक लड़की घर की दहलीज़ पर खड़ी है। आते-जाते लोग उसे लज्जाहीन समझते हैं। उसे अपशब्द कहते हैं। कोई तो कंकड़-पत्थर भी फेंकते हैं।

वह इन सबसे बेपरवाह कृष्ण के इंतज़ार में खड़ी रहती है। माँ-बाप खाने के लिए पुकारते हैं, परंतु वह तो आँखों में आँसू भरकर, अपने प्रियतम के विरह में जल रही थी।

माँ पूछती है...क्या हुआ बेटी? क्यों रो रही हो? तुम्हें क्या तकलीफ़ है?

वह कहती है...माँ मैंने सुना है कि करुणानिधान कृष्ण इसी राह से गुज़रेंगे मैं उनकी ही राह निहार रही हूँ...मैं उनकी मुरली सुनना चाहती हूँ।

वह बड़ी आशा से अपने घायल हृदय से, कृष्ण के आगमन की प्रतीक्षा में जड़वत खड़ी है। कृष्ण को पाने के लिए ऐसी ही उत्कंठा, ऐसी ही आत्मिक प्यास चाहिए। वह लड़की व्याकुल होकर गाँव के सभी रास्तों पर पागलों की तरह कृष्ण को ढूँढने निकल पड़ती है। जब सवेरे वह हारी थकी, घर में प्रवेश करती है, तो कृष्ण उस छोटे से घर में अपनी बाँसुरी बजा कर उसका स्वागत करते हैं।

राधा और गोपियों ने भी कृष्ण के इस दिव्य प्रेम का रस चखा था। एक मार्मिक कथा है जिसे विद्यापति ने बड़े ही सुंदर शब्दों में गाया है।

राधा को ऐसा महसूस होता है कि वह कृष्ण के आने की राह देखते-देखते अपने प्राण त्याग देगी। अब उससे कृष्ण का विरह सहन नहीं होता और वह आँखों में आँसू भर कर अपनी सखी ललिता से कहती है...मैं तो मर रही हूँ, पर अपने कृष्ण को किसके भरोसे छोड़ कर जाऊँ? हे सखी मुझे कृष्ण के नाम के आवरण में छुपा लो। ऐ ललिता मेरी प्राणप्यारी, मुझे आखिरी बार कृष्ण का नाम पुकारने दो। मेरे शरीर को मत जलाओ, मेरी सखी...मेरे शरीर को तूफ़ान में मत बह जाने दो, मेरे शरीर को तमाल पत्रों में लपेट कर बाँध दो, क्योंकि यदि किसी दिन कृष्ण लौटेंगे तो उनकी आवाज से मेरी मृत देह में प्राण लौट आएँगे।

ओ सखीऽऽ मेरे कानों में कृष्ण का नाम गाओ, और उस अमृत को सुनते-सुनते मुझे मृत्यु के दामन में जाने दो। उस चिर निद्रा में सोने से पहले मुझे कृष्ण का अमृत पीने दो।

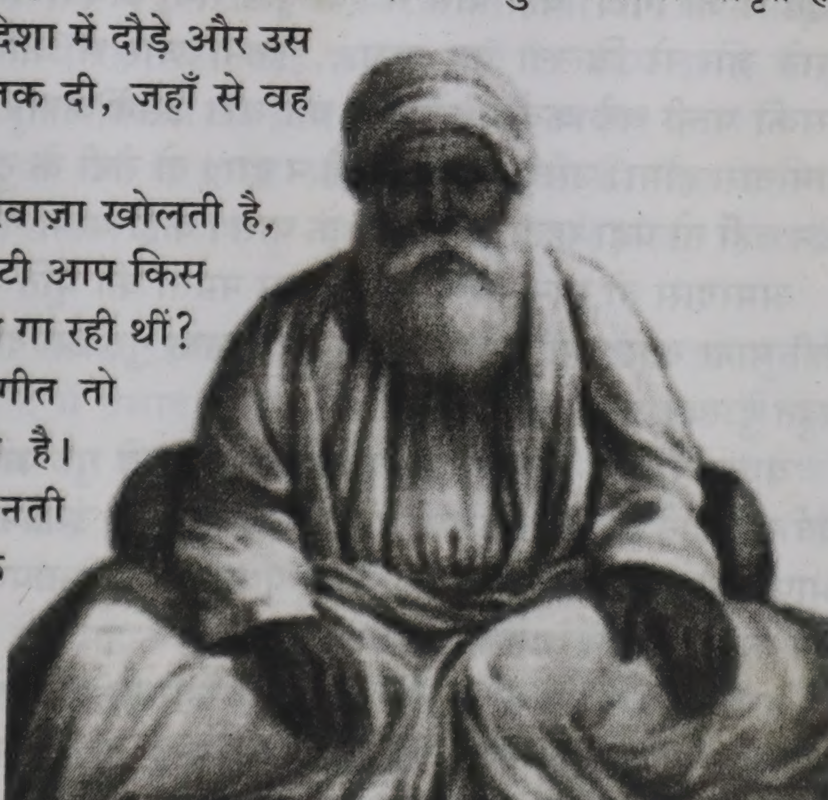
गुरु अमरदास

जे.पी. वासवानी

विनम्रता और सरलता की मूर्ति थे गुरु अमरदास। गुरु की सेवा, गुरुभक्ति ही उनका धर्म था। जब उनकी आयु ६२ वर्ष थी, तब गुरु अंगददेव से उनका परिचय हुआ, जो उनसे पच्चीस वर्ष छोटे थे। अमरदास अपने गुरु की सेवा आदरपूर्वक, एक दास की तरह करते थे। वे सदैव अपने दोनों हाथ जोड़ कर गुरु की सेवा में खड़े रहते थे।

उनका जीवन अत्यंत पवित्र और निर्मल था। वे सत्य के पुजारी थे और परोपकार को अपने जीवन का धर्म मानते थे। उनके दिल में गरीबों और दीन-दुःखियों के लिए अथाह प्रेम था। उनके दिल में सदैव एक बेचैनी रहती थी, एक खालीपन महसूस होता रहता था। उनके हृदय में प्यास थी कि कोई मार्गदर्शक मेरी ज़िंदगी की राह तय करे, ताकि मैं प्रिय प्रभु से मिल कर अपने जीवन को सार्थक बना सकूँ।

एक दिन सुबह-सुबह ब्रह्म मुहूर्त में उनके कानों में एक बालिका के गाए सुंदर गीत की पंक्तियाँ पड़ीं। उस गीत के भाव थे... ''हे प्रभु ! मेरी आत्मा पर न जाने कितने जन्मों के दाग लगे हैं। ये दाग तभी मिटेंगे जब तुम्हारी कृपा का जल प्राप्त होगा। जब किसी सद्गुरु की दृष्टि मुझ पर पड़ेगी, तभी तुम्हारी कृपा प्राप्त करने की राह मिलेगी।'' भोर की किरणों के साथ जब यह स्वर-लहरी उनके कानों में पड़ी तो मानो उनकी सदियों से सुप्त आत्मा जागृत हो गई। वे आवाज़ की दिशा में दौड़े और उस घर के दरवाज़े पर दस्तक दी, जहाँ से वह आवाज़ आ रही थी।



जब बेबी अमरू दरवाज़ा खोलती है, तो उन्होंने पूछा– ... बेटी आप किस संत का इतना सुंदर गीत गा रही थीं?

बेबी अमरू- यह गीत तो मेरे पूज्य नानाजी का है। अमरदास उससे विनती करते हैं कि मुझे उनके दर्शन कराने ले चलो। मैं उनकी चरण वंदना करना चाहता हूँ, मैं स्वयं

को उनके चरणों में अर्पित करना चाहता हूँ।

उस समय अमरदास बासठ वर्ष के हो चुके थे। बेबी अमरू उन्हें अपने नाना गुरु अंगद देव के पास ले जाती है। वे उसी क्षण से स्वयं को उनका दास मान लेते हैं। वे उनकी मन प्राण से सेवा करते हैं। उनके हर छोटे बड़े काम करते, जैसे उनके स्नान के लिए रोज़ सुबह-चार मील दूर से पानी लाना। श्रद्धा इतनी कि गुरु घर को पीठ नहीं दिखानी चाहिए, अतः जाते वक्त उल्टे पाँवों से चल कर जाते। वे उनके कपड़े धोते,भंडारे में सेवा करते। हर काम करते वक्त वे प्रभु के नाम का उच्चारण करते रहते।

इस तरह की सच्ची सेवा भावना और ईश्वर के नाम स्मरण से मनुष्य के अंदर कई अलौकिक शक्तियाँ जागृत हो जाती हैं। उसकी आँखों में दिव्य चमक पैदा हो जाती है। अकसर हम साधारण व्यक्ति जब गुरु की सेवा या अन्य कोई कार्य करते हैं, तो नाम-स्मरण करना भूल जाते हैं, या इसके विपरीत जब नाम जपते हैं, तो दूसरे कार्य करना भूल जाते हैं। जब हम ये दोनों कार्य एक साथ करने में पारंगत हो जाते हैं तो आंतरिक शक्तियाँ जागने लगती हैं।

एक बार जब अमरदास सुबह-सुबह व्यास नदी से पानी भर कर आ रहे थे, तब घनघोर बरसात हो रही थी। चारों तरफ़ अंधेरा छाया हुआ था। आकाश में रह रह कर बिजली कौंध रही थी। आगे का रास्ता दिखाई ही नहीं दे रहा था। वे ईश्वर का नाम स्मरण करते हुए, अपनी ही धुन में चले जा रहे थे कि एक गड्ढे में जा गिरे। वहीं पास में एक कृष्ठ रोगी अपनी पत्नी के साथ रहता था। उसने ज़ोर से चिल्ला कर पूछा... इतनी ज़ोर से कौन गड्ढे में गिर गया? उसकी पत्नी बड़े कर्कश स्वभाव की थी। उसने कहा-और कौन होगा? वही अमरदास होगा। उसका न तो घर है न द्वार। दो रोटी के टुकड़ों के लिए... रात-दिन वहीं तो पड़ा रहता है, गुरुजी के पास। कहीं मर न गया हो।

अमरदास तो मान-अपमान से ऊपर नम्रता की मूर्ति थे। उन्होंने इसका बु[illegible] नहीं माना और वहाँ से चल दिए। जब उनके गुरु अंगददेव ने यह सुना तो उ[illegible] बहुत दुःख हुआ।

वे कहते हैं- "अमरू... (क्योंकि पहले जब गुरु अंगद उन्हें उम्र में पच्ची[illegible] वर्ष बड़े होने के कारण अमरदासजी कहते थे तो उन्होंने विनती की कि कृप[illegible] आप मुझे आज से अमरू कह कर पुकारा करें। आपके मुखारविंद से अम[illegible] सुन कर मेरा दिल बाग बाग हो उठेगा।)

तुम तो बेघरों के घर हो, बेसहारों के सहारे हो, निर्बलों के तुम बल हो। [illegible] तो स्वयं गुरु नानक देव हो? मेरे बाद तुम ही सत्संग करना, भक्तों की से[illegible] करना और उनकी देख-रेख करना।"

गुरु अंगद देव की इच्छानुसार उनकी गद्दी गुरु अमरदास को प्रदान कर दी गई। उनके बेटे दातु को इस बात पर बड़ा क्रोध आया। वह इस बात का विरोध करता है कि-यह है कौन? यह तो एक दास है, मेरे पिता का सेवक है। उनके लिए पानी लाना, झाड़ू लगाना, कपड़े धोना आदि सब कार्य करता था। यह तो एक नौकर है, इसे कैसे गुरु का पद दिया गया? सिख समाज इस बात को नज़रअंदाज़ कर देता है। दातु का क्रोध बेहद बढ़ जाता है, और वह गुस्से से गुरु अमरदास पर लात से प्रहार कर देता है। उस समय गुरु अमरदास ७३ वर्ष के थे। वे तो विनम्रता और सहनशीलता की प्रतिमूर्ति थे। वे तुरंत दातु के पैरों को सहलाते हुए कहते हैं कि...बेटा! मेरा शरीर तो अब बूढ़ा हो गया है, अतः उसकी हड्डियाँ भी काफ़ी सख्त हो गई हैं। शायद मुझ पर प्रहार करने से तुम्हें चोट लगी होगी। आओ मैं तुम्हारे पैर दबा दूँ।

गुरु अमरदास ने, गुरु अंगद देव और गुरु नानक साहब का संदेश दूर-दूर देशों तक फैलाया। इस कार्य के लिए उन्होंने एक सौ छियालीस लोगों का संघ बनाया, जिसमें ९४ पुरुष तथा ५२ स्त्रियाँ थीं। वे स्त्रियों का बहुत आदर करते थे। जिस धर्म में स्त्रियों का आदर नहीं किया जाता वह धर्म कभी फल-फूल नहीं सकता।

इतिहासकारों का मानना है कि सती प्रथा को राजा-राममोहन राय ने बंद करवाया, परंतु इस प्रथा का विरोध सदियों पहले गुरु अमरदास ने किया था। वे कहते थे यह एक बेरहम प्रथा है, इस अमानवीय प्रथा को बंद कर देना चाहिए। उन्होंने अपने इलाके में इस प्रथा का निषेध कर दिया था। वे स्त्रियों से कहते थे...आपको पर्दों में रहने की कोई ज़रूरत नहीं है। आप इससे बाहर निकल कर अपनी अद्‌भुत शक्तियों का ईश्वर की सेवा में उपयोग करो।

वे अपने बनाए संघ को धर्म के प्रचार-प्रसार और गरीबों की सेवा के लिए दूर-दूर भेजते हैं। उनके सत्संग में लोग दूर-दूर से आकर अपने जीवन में मार्ग-दर्शन पाते थे।

गुरुजी का लंगर सदा चलता रहता था। जो भी वहाँ आता वह पहले गुरुजी के दर्शन करता और बाद में प्रसाद पाता। इसमें कोई जाति-बंधन नहीं था, क्योंकि गुरुजी का मानना था कि इस संसार का हर-प्राणी एक ही ईश्वर की संतान है, उनके लिए न कोई छोटा है ना बड़ा, न अमीर है न गरीब और न ही कोई ब्राह्मण है या क्षुद्र। वे कहते इस जाति -भेद को उखाड़ फेंको।

भारत ने अभी तक उस महान संदेश को नहीं अपनाया है। हम आज भी जाति-पाँति के भेद भाव में उलझ कर एक दूसरे पर अन्याय करते हैं। वे संग्रह के विरोधी थे। वे कहते थे... जितनी भी सामग्री आज एकत्रित हुई है, उसे आज ही पका कर सबको खिला दो। कल के कुछ भी संचय मत करो। अगर

शाम को कुछ बच जाए तो उसे पशु-पक्षी, गाय-बैल और नदी के जलचरों को खिला दो। रात को जल-पात्र भी खाली कर दो। जिस प्रभु ने आज हमें सम्हाला है, कल भी वही हमारा प्रबंध करेंगे।

उस समय दिल्ली के सिंहासन पर बादशाह अकबर बैठे हुए थे। उनके कानों तक गुरु अमरदास की ख्याति पहुँची तो वे स्वयं उनके दर्शन करने आए। उन्हें लंगर में खाना खाने का आग्रह किया गया तो वे, भारत के सम्राट, नीचे पंगत पर बैठकर खाने लगे...उन्हें वह प्रसाद इतना स्वादिष्ट लगा कि उन्होंने और माँगा। उन्होंने कहा कि...ऐसा स्वाद तो महलों के खाने में भी नहीं है। यह तो एक दिव्य प्रसाद है। गुरुजी के दर्शन करने के बाद, अकबर बादशाह कहते हैं-आपका यह लंगर हमेशा-हमेशा चलता रहे, इस शुभ कार्य के लिए मैं आपके चरणों में बारह गाँव समर्पित करना चाहता हूँ। इनकी खेती की उपज से आपका लंगर निर्विघ्न चलता रहेगा।

गुरु अमरदास- बादशाह सलामत! मुझे आपके गाँवों की कोई ज़रूरत नहीं है। इस लंगर को चलाना किसी के हाथ में नहीं है, इसकी व्यवस्था तो सदैव प्रभु करते हैं। हमें तो हर रोज़ जो कुछ दान-स्वरूप प्राप्त होता है, उसी दिन खर्च कर देते हैं, यहाँ तक कि पानी के बर्तन तक खाली कर उलटे रख देते हैं।

बादशाह अकबर यह सब सुनकर आश्चर्य से भर जाते हैं। वे कहते हैं-गुरुवर! आपको बारह गाँव की भेंट तो स्वीकार करनी ही होगी। बादशाह यह भेंट उनकी पुत्री को दे देते हैं...और तर्क देते हैं कि आपकी बेटी मेरी भी तो बेटी है। अमृतसर उन्हीं बारह गाँवों से बना है।

गुरु अमरदास की मुख्य शिक्षा थी, यहाँ किसी भी चीज़ को अपना मत मानो। यह सब उस प्रभु की सौगात है। हमें तो सिर्फ़ अपने कर्तव्य निभाने हैं।

जो इस शिक्षा को अपने जीवन में उतार लेता है...उसे नव-जीवन व नव दृष्टि प्राप्त हो जाती है। फिर वह सुख-दुःख, लाभ-हानि, स्वास्थ्य या बीमारी मान-अपमान, जीवन मृत्यु में सदैव आनंद चित्त रहता है। रोज़ सुबह उठते ही प्रभु के नाम या उनकी वाणी का दिन भर मन ही मन स्मरण करें। संसार के प्राणी की सेवा को अपना सौभाग्य मानें।

विशेष सूचना

"दिल का द्वार खोल" के सभी पाठकों से विनम्र निवेदन है कि कृपया अ अपने सभी डी.डी. "साधु वासवानी मिशन" के नाम से ही भेजने की कृपा क "दिल का द्वार खोल" के नाम से नहीं।

अब आगे से चेक स्वीकार नहीं किए जाएँगे।

माता के तीन आभूषण

अपर्णा चटर्जी



ईश्वरचंद्र विद्यासागर का जन्म २६ सितम्बर सन् १८२० में एक कुलीन ब्राह्मण परिवार में मिदनापुर में हुआ था, जो अब पश्चिम बंगाल में है। उनका बचपन घोर गरीबी में बीता, परंतु इससे वे कभी प्रभावित नहीं हुए, और न ही अपने जीवन के लक्ष्य से विचलित हुए।

इनकी प्राथमिक शिक्षा गाँव के स्कूल में हुई, जहाँ भाषा, व्याकरण, अंकगणित और शास्त्रों का अध्ययन करवाया जाता था। ये स्कूल के मेधावी, लगनशील, सुसभ्य, ईमानदार तथा गुरुभक्त छात्र समझे जाते थे। घोर गरीबी के बावजूद इनके माता-पिता ने इन्हें आगे की पढ़ाई के लिए कलकत्ता भेजा।

इन्होंने १८२९ से १८३९ तक अति विपरीत परिस्थितियों में अपनी मेधावी बुद्धि से इतनी प्रवीणता से शिक्षा अर्जित की कि लोग इन्हें विद्या का सागर ही मानने लगे। वे शिक्षा के हर क्षेत्र में पारंगत थे।

सन् १८४१ में २९ दिसम्बर को जब इनकी उम्र केवल २१ वर्ष थी तब इन्होंने कलकत्ता के विलियम कॉलेज में मुख्य पंडित के रूप में अपनी नौकरी की शुरुआत की। सन् १८५० में ये संस्कृत कॉलेज के प्राध्यापक बने और अपनी कड़ी मेहनत और कार्यकुशलता के कारण इनका वेतन दुगना कर इन्हें वहाँ का प्राचार्य बना दिया गया। सन् १८५५ में इन्हें सरकारी विशेष शिक्षा निरीक्षक बनाया गया।

बंगाल के लेफ्टिनेंट गवर्नर, शिक्षा से संबंधित हर मामले में उनकी सलाह लिया करते थे। कई संस्थाओं के वे अवैतनिक सलाहकार थे और कई संस्थानों ने उनका सत्कार किया, जो सामाजिक , सांस्कृतिक और वैज्ञानिक कार्यों से जुड़ी थीं।

विद्यासागर अपनी माँ के सच्चे सपूत थे। वे सदैव अपनी माँ के बलिदानों, शब्दों और कार्यों का उल्लेख किया करते थे। उनकी माँ ने ही उन्हें सांसारिक शिक्षा से भी बड़ी शिक्षा का महत्त्व समझाया था। वे कहती थीं जो उथले ज्ञानी होते हैं उन्हें शिक्षा का अनुदान प्राप्त होता है, इस अनुदान से वे बुद्धिमत्ता और ज्ञान नहीं पा सकते। उस पढ़ाई का क्या फ़ायदा जो मृत्यु के साथ ही समाप्त हो जाए?

*२६ सितम्बर- ईश्वरचंद्र विद्यासागर का जन्मदिवस

आदमी को वही ज्ञान प्राप्त करना चाहिए, जो उसे मृत्यु से निर्भय कर दे। यह ज्ञान आध्यात्मिकता ही सिखा सकती है। सांसारिक ज्ञान आपको रोज़ी रोटी दे सकता है, परंतु अपनी सीमित आवश्यकताओं के साथ स्वतंत्र जीने की कला आपको अमर और शाश्वत सत्य ज्ञान के द्वारा ही मिलती है।

आध्यात्म के प्रति रुचि को उनकी माँ ने ही उनके अंदर जगाया था। ईश्वरचंद्र अपनी माँ के इतने आज्ञाकारी थे कि एक बार जब उन्होंने बुलाया तो नदी में बाढ़ आई हुई थी, कोई भी मल्लाह उस तूफ़ान में उस पार जाने को राज़ी नहीं हुआ तो वे स्वयं नदी में कूद कर उस पार अपनी माँ के पास पहुँच गए। अपनी माँ के प्रति ऐसी अंधभक्ति के उदाहरण बहुत कम हैं इतिहास में।

अपनी शिक्षा पूर्ण होने के बाद वे नौकरी करने अपने गाँव गए तो वहाँ के एक त्यौहार में शरीक हुए। उन्होंने देखा कि गाँव की सारी स्त्रियाँ बहुत सुंदर गहनों और कपड़ों से सजी हैं, परंतु उनकी अपनी माँ फटे-वस्त्रों में लिपटी, अलंकार विहीन खड़ी है। माँ की यह हालत उनके लिए असहनीय थी। उन्होंने कहा- ''माँ आपके पास तो गहने, कपड़े कुछ भी नहीं हैं, मुझे आज्ञा दो मैं आपके लिए कौन से गहने और कपड़े ले आऊँ?''

माँ ने कहा- ''बेटा, यह सब माँगने का अभी सही समय नहीं है। मैं वक्त आने पर स्वयं ही तुमसे माँग लूँगी।''

जब विद्यासागर बहुत ऊँचे पदों पर पहुँच गए तो उन्होंने फिर अपनी माँ से पूछा... ''आपके लिए कौन से गहने लाऊँ?''

उनकी माँ ने कहा- ''मुझे तो केवल तीन गहने चाहिए, परंतु अभी शायद उन्हें पहनने का सही वक्त नहीं आया है।''

कुछ वर्षों के बाद जब विद्यासागर कई उच्च पदों पर पहुँच गए तो उन्होंने फिर माँ से आग्रह किया कि ... ''माँ अब मेरे पास बहुत पैसे इकट्ठे हो गए हैं... तुम आज्ञा दो मैं तुम्हारे लिए कौन से गहने लाऊँ?''

माँ ने जवाब दिया - ''हाँ बेटा अब मेरा अलंकार धारण करने का समय आ गया है। तुम मेरे लिए सिर्फ़ तीन गहने बनवाओगे।

पहला गहना है...एक स्कूल का निर्माण, क्योंकि यहाँ के नन्हें बच्चों को पढ़ने के लिए बहुत दूर जाना पड़ता है।

मेरा दूसरा गहना है...इस गाँव के लिए एक स्वास्थ्य केन्द्र बनवाना होगा, ताकि यहाँ के गरीब लोगों को समय पर चिकित्सा सहायता प्राप्त हो सके।

तीसरा गहना तो तुम्हें स्वयं देना होगा। वक्त के साथ-साथ जैसे जैसे तुम्हारी कीर्ति बढ़े, तुम्हारे कार्य ऐसे होने चाहिए कि अगर कोई पूछे कि तुम्हारी माँ कौन है तो तुम गर्व से मेरा नाम ले सको। पैसों के पीछे कभी मत भागना। धन के पुजारी कभी ईश्वर को नहीं प्राप्त कर सकते। इस नियम का तुम पालन करोगे तो वह तीसरा गहना होगा। हमेशा ऐसे कार्य करना जिनसे तुम्हारी माँ की बदनामी न हो।

विद्यासागर ने अपनी माँ की सारी इच्छाएँ पूर्ण कीं।

विद्यासागर पूरे बंगाल में शिक्षा निरीक्षक के रूप में घूमते रहते थे। तब उन्होंने बंगाल में फैले अंधविश्वास, अशिक्षा और गरीबी का पास से अध्ययन किया। वे स्त्रियों के प्रति धर्म के नाम पर होते अत्याचारों, शोषण को देख कर व्यथित हुए। उन्होंने बड़ी शीघ्रता से दो महीनों के अंदर ही २० स्कूलों की स्थापना की। उनका मानना था कि जब तक स्त्रियों को शिक्षित नहीं किया जाएगा, तब तक उन्हें इस शोषण से मुक्ति नहीं मिलेगी। उन्हें अन्याय और निकृष्टता के विरुद्ध जगाना ज़रूरी है। हिंदू धर्म के अंधविश्वासों की बेड़ियों में जकड़ी इन महिलाओं के लिए उन्होंने तीस और स्कूलों की स्थापना की। इसमें उन्होंने स्वयं की संचित पूँजी तो लगाई ही, साथ ही अपना आधा वेतन और पुस्तकों की रायल्टी भी इन्हीं कामों पर खर्च कर देते थे। उन्होंने इंग्लिश, बंगाली के साथ संस्कृत और अन्य विषयों को भी पढ़ाने पर ज़ोर दिया। उनकी सलाह पर स्त्री शिक्षा में एक नई जागृति आ गई क्योंकि वे चाहते थे कि स्त्रियाँ पूर्व और पश्चिम की शिक्षा में अंतर समझें और एक शाश्वत सत्य की तलाश करें।

वे हिंदू शास्त्रों और यूरोप के विज्ञान की, ज़रूरत पड़ने पर बड़ी निर्भयता से आलोचना करते थे। वे किसी भी चीज़ को अंधविश्वास के आधार पर नहीं स्वीकार करते थे। वे खुले विचारों और सिर्फ़ सत्य की खोज में अडिग आस्था रखते थे।

संस्मरण

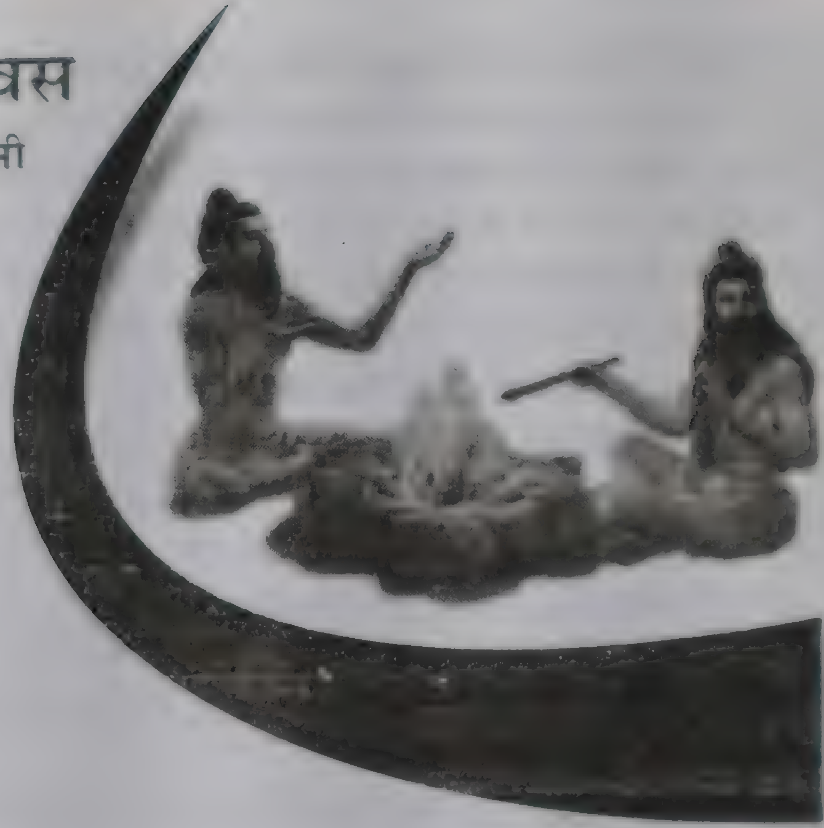
उनके जीवन में कई अद्‌भुत घटनाएँ घटीं जो बड़ी ही प्रेरणादायी हैं।

एक बार वे एक क्लब में आमंत्रित थे। जब वे अपनी साधारण पोशाक में पहुँचे तो दरबान ने उन्हें अंदर नहीं जाने दिया। वे घर जाकर आधुनिक वस्त्र पहन कर उत्सव में शामिल हुए और कहने लगे यह खाना तो मेरे लिए नहीं, मेरे वस्त्रों के लिए है।

एक बार वे किसी गाँव में प्रवचन करने के लिए वहाँ के स्टेशन पर उतरे तो पास के डिब्बे से एक अंग्रेज़ भी उतरा और कुली को पुकारने लगा। विद्यासागर ने कहा-इतने छोटे से बैग के लिए कुली की क्या ज़रूरत है? आप स्वयं ही उठा कर चलिए। वे सज्जन बोले-भार उठा कर चलना मेरी प्रतिष्ठा के विरुद्ध है, मैं एक बड़ा अधिकारी हूँ। विद्यासागर ने उनका बैग भी उठा लिया और उनके गंतव्य पर पहुँचा दिया। जब उन्होंने कुछ मज़दूरी देनी चाही तो इन्होंने विनम्रता पूर्वक कहा... ''आपकी सेवा करना ही मेरे लिए इनाम है।'' जब वे सज्जन प्रवचन सुनने गए तो वहाँ स्टेज पर विद्यासागर को देख कर चकित रह गए। उन्होंने कहा... मैं तो इस सूर्य के सामने एक दीपक के समान हूँ। •

ऋषि तर्पण दिवस

साधु टी.एल. वासवानी



"ऋषि तर्पण दिवस" जिसे ऋषि-मुनि अति पवित्र दिवस मानते हैं। आप याद रखें ऋषि-मुनियों पर केवल भारत का ही एकाधिकार नहीं है, बल्कि ये तो विश्व के हर हिस्से में अवतरित होते रहते हैं। उनके शरीरों को आप पूर्वी या पश्चिमी नाम दे सकते हैं परंतु वे तो देश और काल की सीमाओं से परे एक शाश्वत आत्मा होते हैं।

पवित्र "ऋषि तर्पण दिवस" वह दिन है जब आर्य ऋषि , अपने आश्रमों, साधना स्थलों से, जंगलों से, गुफ़ाओं से बाहर आकर अपनी साधना द्वारा पाए गए ज्ञान का प्रसाद साधारण जनता के बीच बाँटते थे। इस ज्ञान के ख़ज़ाने को बाँटने के लिए वे मनुष्य रूप में विचरण करते थे। वे लोगों से पूछते थे कि क्या राजा व दरबारी आपका ठीक से पालन-पोषण कर रहे हैं? उनमें एक ऐसी शक्ति होती थी कि वे किसी राजा की शिकायत मिलने पर राजा और प्रजा के बीच की दूरियाँ औ मनमुटाव दूर कर देते थे। इस तरह यह आर्य-नियम था कि, ज़्यादातर खुशिया इकट्ठी की जाएँ, उन्हें उपलब्ध करवाई जाएँ।

उस समय भारत एक समृद्ध, स्वतंत्र और शक्तिशाली जनपद था। डॉ. हावेल ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि, आर्यों के शासन काल में भारत इतना ज़्यादा समृ खुशहाल देश था कि उसकी तुलना विश्व के किसी भी राष्ट्र से असंभव थी।

ऋषि गण अपनी साधना स्थली से बाहर आकर समय-समय पर लोगों प अपने आशीष बरसाते थे। मैं अकसर यही महसूस करता हूँ कि अभी भी वे हम प

कृपा करने आते हैं, वे भारत ही नहीं सारे विश्व के देशों पर अपने आशीर्वाद बरसाते हैं।

भारत के उत्थान के लिए तीन चीज़ों की आवश्यकता है।

१. स्मृति या स्मरण २.स्वाभिमान ३.स्वाधीनता।

यह याद करें कि आप कौन हैं? अपने आत्माभिमान को अपने दैनिक कार्यों में व्यस्त करें, और यह दर्शित करें कि आप स्वयं का आदर करते हैं। विदेशी नकल, फ़ैशन या परिधान कभी भी आपके मददगार नहीं होंगे। किसी की नकल करने से कोई राष्ट्र निर्मित नहीं होता। आप जब सारी चीज़ें अपनी महान अन्तरात्मा की प्रेरणा से करेंगे तो आशा से भी ज़्यादा प्रगति कर लेंगे।

आज आप अपने हृदय में ऋषियों की कुछ यादें बसा लें। जहाँ तक मेरी स्मृति काम करती है चौदह महान ऋषि हैं। चौदह नंबर एक जादूई नंबर है क्योंकि यह सात का गुणक है। इनमें से तीन महाऋषि कहलाते हैं...इन सभी ने हमें महान ज्ञान के संदेश दिए हैं। ऋषियों के महान गुणों पर मैं कुछ प्रकाश डालना चाहता हूँ। आज इस शब्द का प्रयोग बड़े धड़ल्ले से हो रहा है, क्योंकि लोग इस शब्द की महान गरिमा से अपरिचित हैं।

ऋषि एक पवित्र आत्मा होते हैं... जिन्होंने उस पराशक्ति के दर्शन किए हैं। वे दूरद्रष्टा होते हैं। कुछ लोग ज्ञानियों के लिए भी इसी शब्द का प्रयोग करते हैं, परंतु इस शब्द का अर्थ बहुत महान व्यक्तित्व का प्रतीक है।

ऋषि वे परम पवित्र संत होते थे, जो मनुष्यों की उच्च शक्ति और दिव्य दृष्टि के धारक थे। सिर्फ़ ज्ञानवान के लिए ही ऋषि शब्द नहीं है। कई लोग पुस्तकें पढ़ते हैं, कई प्रखर बुद्धि वाले भी होते हैं। ऋषियों को अपनी साधना के दौरान दिव्य ऋचाओं के दैवी दर्शन होते थे, जो उस शाश्वत अंतरिक्ष में तरंगों और कंपन के रूप में सदैव विराजमान है। ऋषियों को इनके प्रथम दर्शन होते थे। हमारी तार्किक बुद्धि शायद यह स्वीकार न करे, क्योंकि हमारा ज्ञान अति सीमित है। उनकी आत्मा तो उस परम चेतना से जुड़ी होती थी, जो इस सृष्टि की संचालक है, इसीलिए उन पर यह दैवी कृपा होती थी।

कई ज्ञानी, सुसभ्य और सुसंस्कृत लोगों के चरणों में मैंने बैठ कर काफ़ी कुछ ज्ञान ग्रहण किया है। एक ज्ञानी को हम ऋषि नहीं कह सकते, ऐसा मेरा मानना है। ऋषि की पदवी पाने का अधिकार उसे है, जिसकी आंतरिक, शारीरिक और आत्मिक शक्तियाँ विकसित हो चुकी हैं, उसका तीसरा नेत्र, जो ज्ञान का नेत्र माना जाता है, वह प्रदीप्त हो चुका हो।

ऋषियों के अंदर सृजन शक्ति होती है। उन्होंने अपनी अपार शक्ति से अति अर्वाचीन महान आर्य सभ्यता की निर्मिति की थी।

आप भारतीय हिंदू और आधुनिक डार्विन की, मनुष्य के विकास के सिद्धांत की ज़रा आपस में तुलना करके देखिए-पश्चिमी सिद्धांत के अनुसार प्रागैतिहासिक मानव, जंगली और असभ्य था, कई दर्दनाक परिस्थितियों का सामना करने के बाद वह आज की स्थिति में पहुँचा है। इसलिए हम आज हमारे पूर्वजों से ज़्यादा बुद्धिमान और सुसभ्य हैं। इसीलिए पश्चिम के विद्वानों से जब हम अपने अलौकिक, ईश्वरीय, ज्ञानवान सुसंस्कृत पूर्वजों और ऋषियों का स्तुतिगान करते हैं, तो उन्हें न तो यह स्वीकार्य है, और न ही विश्वसनीय। हिंदू मान्यता के अनुसार सृष्टि के प्रारंभ से ही मनुष्यता को अति विकसित और प्रचुरता देने के लिए कई दिव्य आत्माएँ इस पृथ्वी पर ऋषि के रूप में प्रकट हुई और उन्होंने विकास की प्रक्रिया का दायित्व स्वयं पर ले लिया। इसलिए हमारी मान्यता है कि हमारी मानव जाति के विकास की अग्रिम पंक्ति में हमारे दिव्य ऋषि खड़े थे। उन्होंने ही हमारी सभ्यता का निर्माण और मार्गदर्शन किया है। ऋषि तो शक्ति के पुत्र थे, आत्मज थे।

वे एक कांतिमान ज्योतिर्पुंज थे, जिनके अंदर से सबके लिए स्नेह... व आशीष के निर्झर बहते थे, जो पंछियों, मनुष्यों, पेड़ों, पशुओं सब पर अपनी कृपापूर्ण प्रेम वृष्टि करते थे। वे प्रेम की शक्ति के पुंज थे।

• इस दिन को ''ऋषि तर्पण दिवस'' इसलिए नाम दिया है कि, तर्पण का अर्थ है भोज्य पदार्थों को अर्पण करना, उनका भोग चढ़ाना। आप इनको आज क्या अर्पण करना चाहेंगे? आप आज इनके चरणों में अपनी सच्ची श्रद्धा और आदर अर्पण करें। अपने भाग्य पर विश्वास करना सीखें। आज इस पवित्र दिन, आप अपने हृदय के अंदर पवित्र संकल्पों के बीज बोने दें ताकि आप अपने अतीत के महान ऋषियों के, दिव्य परमात्मा के संदेशों को ग्रहण कर, अपने जीवन को अमूल्य बना सकें।

सत्संग प्रवचन

जे. पी. वासवानी



ॐ गं गणपतये नमः

गणेश चतुर्थी भगवान श्री गणेश का जन्म दिवस है। महाराष्ट्र में गणेशजी की पूजा का पर्व बड़ी श्रद्धा और उल्लास के साथ १० दिनों तक मनाया जाता है।

इस पर्व को भव्यता प्रदान करने वाले थे राष्ट्रप्रेमी श्री लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक। आज़ादी की लड़ाई में सबको एकत्रित कर उन्हें स्वतंत्रता के प्रति जागरूक करना ही उनका उद्देश्य था।

अब तो यह उत्सव संपूर्ण भारत में मनाया जाने लगा है। हर घर, हर गली, हर मुहल्ले में भगवान श्री गणेश की मूर्तियों की सार्वजनिक पूजा-आराधना और आरतियाँ होती हैं। कई सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जाता है। बड़ी-बड़ी भव्य मूर्तियाँ और जनसमूह की सामूहिक आराधना संपूर्ण भारत को भक्ति भाव से विभोर कर देती हैं। सब मिल कर अपनी मनोकामना की पूर्ति का आशीर्वाद माँगते हैं।

आज तो आप जहाँ भी जाएँ गणपति के मंदिर दिखाई देते हैं। हर कार्य का शुभारंभ गणेश पूजन से ही होता है। शादी हो या विद्या का प्रारंभ, नई दुकान का मुहूर्त हो या ऑफ़िस का उद्घाटन, सबसे पहले गणेश पूजा का विधान है। गणेशजी को विघ्नविनाशक भी कहते हैं।

भागवत पुराण में लिखा है- महाभारत के युद्ध से पहले जब कौरवों और पाँडवों की सेनाएँ इकट्ठी हो रही थीं, तब धर्मराज युधिष्ठिर ने श्री कृष्ण से पूछा... मैं विजय पाने के लिए किस देवता की आराधना करूँ? श्रीकृष्ण ने कहा-तुम श्रीगणेश की आराधना करो, वे ही तुम्हें विजयी करेंगे। और यही बात सच भी हुई, विजय पाँडवों को ही मिली।

ब्रह्म पुराण में शिव-पार्वती संवाद में जब पार्वतीजी ने महादेव से पूछा कि...कलियुग में तो लोगों की माँगें बढ़ जाएँगी...हर एक की कामना अलग अलग होगी...कोई पैसा चाहेगा, तो कोई नौकरी, कोई संतान चाहेगा तो कोई पति या पत्नी, किसी को मकान तो किसी को दुकान, कोई बीमारी से मुक्ति चाहेगा तो कोई कुछ और। मनुष्य की कामनाओं का क्या कहीं अंत है?

महादेव-देवी! श्री गणेश की आराधना से सारी मनोकामनाओं की पूर्ति होगी। अगर कामना पवित्र और शुद्ध हो तो गणेश उसे अवश्य पूर्ण करते हैं।

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।

निर्विध्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

इस वक्रतुंड- महाकाय गौरीपुत्र की पूजा का विधान अत्यंत सरल है, बस आप श्रद्धा से जो कुछ भी चढ़ा कर, सच्चे मन से आराधना करेंगे तो आपकी इच्छा अवश्य पूर्ण होगी।

ब्रह्म पुराण में शिव-पार्वती से कहते हैं-कि जब श्रीकृष्ण और सुदामा बाल्यावस्था में सांदिपनी आश्रम में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे, तब दोनों के बीच बहुत प्रेम था। जब वे दोनों अलग हुए तो, कई दिनों तक अलग रहे। सुदामा ब्राह्मण थे। घर गृहस्थी थी। गरीबी इतनी थी कि...बच्चों को भी भरपेट खाना नहीं मिलता था। सुदामा किसी के सामने हाथ नहीं फैलाते थे क्योंकि यह ब्राह्मण धर्म के विरुद्ध था। ठंड में शरीर ढकने को भी वस्त्र नहीं होते थे। रात को काँपते रहते थे। सुदामा कहता-ईश्वर का भजन करो ठंड नहीं लगेगी।

कृष्ण तो द्वारकाधीश बन गए, परंतु सुदामा तो कंगाल ही रहे। उनकी पत्नी कहती...तुम्हारा मित्र तो इतना बड़ा राजा है। तुम्हारा बालसखा है, तुम उसके पास क्यों नहीं जाते? सुदामा को यह सब अनुचित लगता है परंतु पत्नी के आग्रह पर कृष्ण के पास जाने को राजी हो जाते हैं। पत्नी पड़ोस से कु चिवड़ा लाकर एक पोटली में बाँध कर कृष्ण की भेंट तैयार कर देती है।

सुदामा घर से चल तो पड़े परंतु सोचने लगे कि क्या इतने वर्षों के बाद भ कृष्ण मुझे पहचान सकेंगे? वे तो महाप्रतापी राजा हैं, और मैं फटेहाल ए कृशकाय ब्राह्मण। मेरी और उनकी क्यां बराबरी है?

द्वारका में जब कृष्ण को द्वारपाल ने बताया कि आपके मित्र सुदामा पध हैं...तो कृष्ण नंगे पाँव अपने सिंहासन से उतर कर, अपने मित्र की अगवानी लिए पहुँचे और अपने मित्र को गले लगा लिया। सुदामा ने जब उन्हें मै पोटली में बँधा चिवड़ा भेंट किया तो उन्होंने बड़े प्रेम से वह सारा खुद खाया, किसी और को छूने तक नहीं दिया।

कृष्ण ने कहा...सुदामा मुझे मालूम है कि तुम्हारे घर में घोर गरीबी है...

उससे मुक्ति पाने का उपाय बताता हूँ। तुम आज से भगवान गणपति की पूजा करो, इसकी विधि तुम्हें मेरे राजपुरोहित श्री गार्गाचार्य बता देंगे

सुदामा विधिनुसार ''ॐ गं. गणपतये नमः'' का रात भर जाप करते हैं। वह गणेश चतुर्थी का दिन था। सुदामा दूसरे दिन कृष्ण से विदा लेकर घर की ओर प्रस्थान करते हैं।

राह में एक करोड़पति स्वर्ण व्यापारी मणीराम अपने साथ सौ गठरियों में सोना बाँधकर ले जा रहा था। वह उस रात एक गाँव में ठहरा। वह जिस धर्मशाला में ठहरा था, उस पर डाकुओं ने हमला किया और सारा सोना लूट लिया। मणीराम अपने इस नुकसान पर दुःखी होकर रोने लगा। उसका एक रात में ही करोड़ों का नुकसान हो गया। उसे अपना धन वापस मिलने की कोई संभावना नज़र नहीं आ रही थी। इस पर भी उसने ईश्वर से प्रार्थना की, और यह प्रण किया कि... अगर मेरा कुछ भी धन वापस मिल गया तो उसका आधा हिस्सा, जो भी ब्राह्मण मुझे सबसे पहले मिलेगा उसे दान कर दूँगा।

दूसरे दिन सुबह जब मणीराम धर्मशाला से निकला तो उसे अपनी एक गठरी मिली। शायद वह डाकुओं के हाथ से गिर गई होगी। उसकी उस गठरी में एक हज़ार स्वर्ण मुद्राएँ थीं। उसे अपना प्रण याद था। उसने पाँच सौ मुद्राएँ अपने पास रख लीं और बाकी पहले मिलने वाले ब्राह्मण को दान करने के लिए अलग कर लीं।

उसी वक्त सुदामा वहाँ से गुज़र रहे थे। मणीराम ने पूछा... क्या आप ब्राह्मण हैं? सुदामा ने कहा... हाँ मैं एक गरीब ब्राह्मण हूँ।

मणीराम ने कहा... फिर तो तुम इन पाँच सौ स्वर्ण मुद्राओं के अधिकारी हो। कृपया इन्हें स्वीकार करो। यह प्रसंग ब्रह्म पुराण में स्वयं शिवजी ने पार्वती को सुनाया है।

क्या आपने गणपति की मूर्ति को गौर से देखा है, गणपति का सिर हाथी का है, किंतु उनकी सवारी है मूषक राज। इसमें एक रहस्य है। हाथी एक ज्ञानवान और बुद्धिमान प्राणी है। ज्ञानी वह नहीं है; जिसने काफ़ी डिग्रियाँ पा ली हों या कई शास्त्रों का अध्ययन कर लिया हो। सच्चा ज्ञानी तो वह है जिसने स्वयं को जान लिया हो और ईश्वर का साक्षात्कार कर लिया हो। उसे हर तरफ़ ईश्वर का दीदार होता हो। सच्चा ज्ञान है एक ज्योति स्वरूप... । ज्ञान की ज्योति सूर्य और चंद्रमा से भी ज़्यादा प्रखर होती है। यह ज्योति जिसके हृदय में बस जाती है, वही सच्चा ज्ञानी होता है।

सच्चा ज्ञानी विनम्र और विनयशील होता है। चूहा इसी का प्रतीक है। यह नन्हा सा जीव, आहट होते ही भयभीत होकर छुप जाता है। गणपति ने इसे ही

अपना वाहन चुना। यह ज्ञान और विनम्रता का संयोग है। विद्या व्यक्ति को विनम्र बना देती है, उसे अहंकार से मुक्त कर देती है।

उस दिन गणपति अपने जन्म दिवस पर बहुत खुश थे। गणपति अपने भक्तों के घर-घर जाकर मोदक का भोग लगाते हैं। भक्त भी जानते हैं कि गणपति को मोदक अतिप्रिय हैं। उन्होंने भक्तों को प्रसन्न करने के लिए सारे मोदक खा लिए और उनका पेट फूल गया। अपने वाहन चूहे पर बैठ कर जब वे घर की तरफ़ लौट रहे थे कि रास्ते में एक सर्प आ गया। चूहे ने जब सर्प को देखा तो वह डर कर उछलने लगा। गणपति उस पर से गिर पड़े और यह दृश्य देख कर चंद्रमा आकाश में हँसने लगे। गणपति इस बात पर रुष्ट हो गए और अपना एक दाँत तोड़ कर उसकी ओर फेंकते हुए बोले...तुम मुझ पर हँस रहे हो तो मैं तुम्हें श्राप देता हूँ कि...जो भी व्यक्ति आज की रात तुम्हारी ओर देखेगा उसे चोरी का झूठा कलंक अवश्य लगेगा। इसके बाद उन्होंने उस सर्प को अपनी कमर पर बाँध लिया।

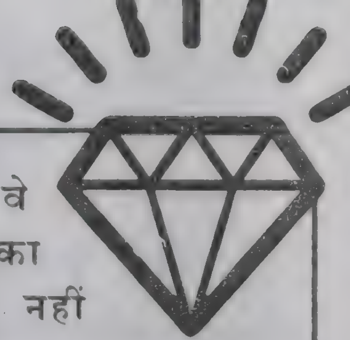
इस बात में यह संदेश है कि हमें किसी संत, महात्मा या प्रभु के भक्त पर हँसना नहीं चाहिए। उनकी कभी निंदा नहीं करनी चाहिए, और न ही उनके लिए कभी अपशब्दों का इस्तेमाल करना चाहिए।

गणेश जी की स्थापना इस दिन हर जगह होती है। इस अवसर पर हमें भी उनकी स्थापना अपने मन-मंदिर में करनी चाहिए। एकांत में कुछ क्षण बैठ कर उनका आवाहन करें और फिर उनसे प्रार्थना करें कि आओ मेरे अंतर में विराजो, ताकि मैं अपने प्रेम और श्रद्धा के सुमन से तुम्हारा अभिषेक करूँ। आप महसूस करेंगे कि आपके आस-पास एक पवित्रता फैल रही है।

हम ईश्वर को सीधे नहीं पा सकते इसीलिए हम उनकी विभिन्न रूपों में आराधना करते हैं। गणपति भी परमेश्वर की अनंत शक्तियों का एक स्वरूप है। बच्चे बूढ़े सभी इनकी श्रद्धा पूर्वक पूजा करते हैं और अपनी मनोकामना की पूर्ति के लिए प्रार्थना करते हैं। पूजा हम किसी की भी करें, वह तो उस निराकार तक पहुँचती है। मुझसे कई बार लोग प्रश्न करते हैं कि क्या गणपति की पूजा करने से कोई लाभ होता है?

मैं कहता हूँ...शायद इनकी पूजा से आपके हालात न बदलें...परंतु आप स्वयं बदल जाएँगे। क्योंकि जितनी हम उनकी आराधना करते हैं, उतने ही दिव्य गुण हमारे अंदर समाने लगते हैं। फिर हम किसी भी स्थिति का सामना करने में सक्षम हो जाते हैं। हमारे अंदर एक दिव्य शक्ति जागृत हो जाती है।

काश! हमारे अंदर भी ईश्वर के प्रति संपूर्ण समर्पण का भाव जागे...और हमारा हर कार्य उनकी ही खातिर हो।



मक्खी का लोभ

एक व्यापारी अपने ग्राहक को शहद दे रहा था। अचानक व्यापारी के हाथ से शहद का बर्तन गिर पड़ा। बहुत-सा शहद भूमि पर ढुलक गया। जितना शहद व्यापारी उठा सकता था उतना उसने ऊपर ऊपर से उठा लिया, लेकिन कुछ शहद भूमि पर गिरा रह गया।

बहुत सी मक्खियाँ शहद की मिठास के लोभ से आकर उस शहद पर बैठ गईं। मीठा-मीठा शहद उन्हें बहुत अच्छा लगा। जल्दी-जल्दी वे उसे चाटने लगीं, जब तक उनका पेट भर नहीं गया। जब मक्खियों का पेट भर गया, उन्होंने उड़ना चाहा, लेकिन उनके पंख शहद से चिपक गए थे। जितना उड़ने के लिए वे छटपटातीं उतना ही उनके पंख चिपक गए।

बहुत-सी मक्खियाँ शहद में लोट-पोट होकर मर गईं। बहुत सी पंख चिपकने से छटपटा रही थीं, लेकिन और भी मक्खियाँ शहद के लोभ से वहाँ आईं। मरी और छटपटाती मक्खियों को देखकर भी वे शहद खाने का लोभ छोड़ नहीं सकीं।



मक्खियों की दुर्गति और मूर्खता देखकर व्यापारी बोला-जो लोग जीभ के स्वाद के लोभ में पड़ जाते हैं, वे इन मक्खियों के समान मूर्ख होते हैं। स्वाद का थोड़ी देर का सुख उठाने के लोभ से वे अपना स्वास्थ्य नष्ट कर देते हैं, रोगी बनकर छटपटाते हैं और शीघ्र मृत्यु का ग्रास बनते हैं।

त्याग का रहस्य

एक अमीर पति-पत्नी ने संसार का त्याग किया और तीर्थ यात्रा के लिए निकल पड़े।

एक बार जब वे एक जंगल से गुज़र रहे थे तो पति ने ज़मीन पर गिरा हुआ एक हीरा देखा। उसने एकदम हीरे को अपने पैर के नीचे छुपा दिया और पत्नी को आगे जाने दिया। उसे डर था कि हीरा देख कर उसकी पत्नी को उसे लेने का लालच न हो जाए और अपने त्याग के फल से वंचित न हो जाए। फिर भी पत्नी ने उसके मन की बात जान ली और कहा, यदि तुम्हारे मन में अभी भी हीरे और धूल में अन्तर है, तो संसार को क्यों त्यागा?

वह सच्चे त्याग की प्रतीक थी।

बाल वाटिका



टिक-टाक

लटका है घड़ियाल दीवार पर
टिक-टाक करता रहता हर पल
टिक-टाक! टिक-टाक!
करते कहता है... प्रभु का नाम गाओ
और सदा सदा मुस्कराओ।

- दादा जे.पी. वासवानी



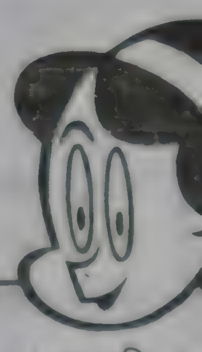
बूझो तो जानें?

चार अक्षर का मेरा नाम,
टिमटिम तारे बनाना काम
शादी, उत्सव या त्योहार,
सब जलाएँ बार-बार।

तीन पैर की चंपा रानी,
शाम सवेरे नहाए,
चावल-दाल को छोड़ कर
कच्ची रोटी खाए।

सुबह-सुबह ही जाता हूँ,
दुनिया की खबर सुनाता हूँ,
बिन मेरे उदास हो जाते,
मेरे इंतज़ार में बैठ जाते।

पैर नहीं हैं,
पर चलती रहती,
दोनों हाथों से अपना
मुँह पोंछती रहती।



सितम्बर की पहेलियों के उत्तर
१. फुलझड़ी २. अखबार ३. सिगड़ी ४. घड़ी

अगस्त की पहेलियों के उत्तर
१. पैसा २. जामुन ३. केला ४. घड़ी

स्वतंत्र भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति -डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन



डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म ५ सितम्बर १८८८ को हुआ था। वे एक महान दार्शनिक और राजनीतिज्ञ थे। पूर्व और पश्चिम के आदर्शों की और विचारों की उन्होंने बहुत ही सुंदर समालोचना की थी। वे ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय के स्नातक थे।

सर्वपल्ली उनके परिवार का नाम था और राधाकृष्णन उनका प्रथम नाम था। वे भारत के प्रथम उप राष्ट्रपति तथा द्वितीय राष्ट्रपति थे। उनका जन्म दक्षिण भारत में चेन्नई से ६४ कि.मी.दूर तिरूतानी गाँव में हुआ था, जहाँ उनकी प्रारंभिक बाल्यावस्था बीती। इसके बाद तिरुवल्लुर के गोवाडी स्कूल में उनकी प्राथमिक शिक्षा हुई और कॉलेज की मास्टर्स डिग्री मद्रास विश्वविद्यालय से प्राप्त की थी।

कई अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय उच्च पदों पर कार्य करते हुए भारत की तरफ़ से उन्हें युनेस्को और मास्को में राजदूत बना कर भेजा गया। इसी दौरान उन्हें सोवियत युनियन में नेताजी सुभाषचंद्र बोस से भी मिलने की इजाज़त मिली। इस मुलाकात की खबर भारतीय प्रेस को भी लग गई और सोवियत रूस की हिरासत में बंदी नेताजी को छुड़वाने की अपील शुरू कर दी गई। अधिकारिक तौर पर उस समय उनकी 'मुक्ति के कोई प्रयास नहीं किए गए।

सन् १९६२ से सन् १९६७ तक वे देश के राष्ट्रपति रहे। जब १९६२ में उन्होंने राष्ट्रपति पद की शपथ ली तो उनके मित्रों, छात्रों तथा प्रशंसकों ने उनका जन्म दिन मनाने की इज़ाजत माँगी। इसके जवाब में उन्होंने कहा- मेरा जन्मदिन मनाने की बजाय अगर आप लोग ५ सितम्बर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाएँगे तो मुझे ज़्यादा गर्व होगा। उसी दिन से भारत में ५ सितम्बर को, शिक्षकों को चारित्रिक और सांस्कृतिक निर्माणकर्ता के रूप में आदरपूर्वक सम्मानित किया जाता है।

उन्होंने पश्चिम के दर्शन को भौतिक सुखों पर आधारित मानते हुए, हमारे भारतीय सनातन धर्म की विशेषताओं को अंग्रेज़ी में अनुवादित कर उनकी श्रेष्ठता को सिद्ध किया। विश्व के मानचित्र पर भारतीय दर्शन की श्रेष्ठता से परिचित करवाने के उपलक्ष्य में उन्हें सन् १९५४ में 'भारत रत्न' घोषित किया गया।

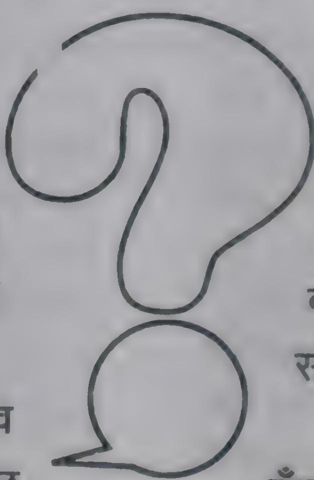
ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय ने राधाकृष्णन छात्रवृत्ति की घोषणा उनकी स्मृति में की। १९६१ में उन्हें जर्मन पुस्तक व्यापार की ओर से शांति पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

*५ सितम्बर-डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म दिवस

भक्तों के सवाल-दादा के जवाब

आज पश्चिम के अधिकांश लोग पूर्व के धर्म और आध्यात्म को अपना रहे हैं। यहाँ की परंपरा का क्या विशेष संदेश है?

गीता के अनुसार यहाँ का सबसे महत्त्वपूर्ण संदेश जीवन के तीन हिस्सों में बँटा हुआ है। इनमें से पहला है अपने कर्तव्य के प्रति लगन, दूसरा है मानवता की सेवा और तीसरा संदेश है, रोज़ थोड़ी देर एकांत में मौन साधना।



क्या आप रोज़ 'मौन साधना' को ज़्यादा विस्तार से बताएँगे?

हम एक शोर से भरे विश्व के निवासी हैं, हमें रोज़ कुछ देर के लिए इस सबसे दूर होने का प्रयत्न करना चाहिए। जिस तरह से हम मिट्टी और धूल से भरे मैले कपड़ों को रोज़ धो कर साफ़ करते हैं, उसी तरह मन को निर्मल बनाने के लिए रोज़ कुछ देर इस शोर से दूर रहना ज़रूरी है। कम से कम २० मिनट तक एकांत साधना ज़रूरी है, इसमें आप ईश्वर से बातें कर सकते हैं या आध्यात्मिक चिंतन कर सकते हैं।

हम हमारे मस्तिष्क को कैसे शांत करें?

या तो आप अपने आराध्य से संभाषण करें, और फ़ैसला करें कि कौन से कार्य आपने व्यर्थ ही किए हैं, और अपना अमूल्य समय गँवाया है और कई आवश्यक कार्य नहीं किए जो आपको करने चाहिए थे। इसके लिए क्षमा माँगें और आगे से अपने जीवन का एक एक पल साहस और बुद्धिमानी से सार्थक बनाएँ। ध्यान साधना की शुरुआत करने से पहले मस्तिष्क को संतुलित करना आवश्यक है।

रोज़ ट्राफ़िक में कई घं फँसा रहता हूँ, कृपया मार्गदर्शन करें कि इस समय का कैसे सदुपयोग करूँ?

यह समय तो तुम्हारे लिए ईश्व से निकटता प्राप्त करने का वरदा है। जब तुम अपनी कार में बैठे ह तो ईश्वर से बातें करो। इसके लि तुम्हें ध्यान लगाने की ज़रूरत नहीं है। बस ईश्वर की उपस्थि को महसूस करना सीखो। ईश्वर हमारे साथ हर समय रहते हैं। वे अभी भी यहाँ हमारे पास हैं।

हँसी के गुब्बारे

बीनाः सर! हम रोज़ आपको गुड मॉर्निंग कहते हैं, परंतु आप कभी उसका जवाब क्यों नहीं देते?

सरः आठ वर्ष पहले मैंने एक लड़की को इसका जवाब दिया था, फिर हमारी शादी हो गई, और मैं अभी तक पछता रहा हूँ।

बंटीः पापा! आपने जो पौधा लगाया है, वह शायद नहीं पनपेगा।

पापाः क्यों?

बंटीः क्योंकि उसमें नई जड़ें ही नहीं आई हैं।

पापाः तुम्हें यह कैसे मालूम?

बंटीः मैं रोज़ उसे निकाल कर देखता हूँ।

पत्नीः सुनो जीऽ आज ऑफिस से ज़रा जल्दी आना।

पतिः क्यों! क्या कोई खास काम है?

पत्नीः हाँ आज आपके लिए रूमाल खरीदने हैं।

पतिः यह अचानक तुम्हें मेरे लिए रूमाल क्यों खरीदने हैं?

पत्नीः एक दुकान पर चार साड़ियों पर दो जेन्ट्स रूमाल फ्री दिए जा रहे हैं।

सासः बहू तू इस भिखारी को रोज़ खाना क्यों खिलाती है?

बहूः यह बेचारा सारा खाना चुपचाप खा लेता है, आपकी तरह रोज़-रोज़ कोई नुक्स नहीं निकालता।



सेठजीः रामू, तू सुबह सुबह ज़ोर से क्यों रो रहा है?

रामूः सेठजी अपनी बिल्ली कल रात मर गई इसलिए।

सेठजीः ठीक है...बिल्ली के मरने का तुझे इतना दुःख क्यों हो रहा है?

रामूः अब मैं दूध पी जाने का इल्ज़ाम किस पर लगाऊँगा?

एक ग्रामीण जब चौथी बार टिकट काउन्टर पर टिकट खरीदने आया तो बुकिंग क्लर्क ने पूछा- क्यों भाई साहब, आप केवल टिकट ही खरीदते रहेंगे या फिल्म भी देखेंगे?

इस पर ग्रामीण ने शिकायत भरे लहज़े में कहाः क्या करें भाई! तुम लोगों ने न जाने किस गँवार को दरवाज़े पर खड़ा कर दिया है, जब भी मैं वहाँ जाता हूँ, वह मेरे हाथ से टिकट लेकर उसे फाड़ देता है। ●

रसोई

उकड़ी के मोदक

सामग्रीः २ कप चावल का आटा, १ बड़ा चम्मच शुद्ध घी, नमक स्वादानुसार,

भरने के लिएः डेढ़ कप किसा हुआ नारियल, गुड़ ३/४ कप, इलायची पाउडर आधा छोटा चम्मच।

विधिः डेढ़ कप पानी उबालने को रखें, उसमें नमक और गी मिलाएँ। अब उसमें चावल का आटा धीरे धीरे करके मिलाते जाएँ। ऐसे मिलाएँ जिससे उनमें गुठलियाँ ना पड़ें। गैस पर से बरतन को नीचे उतारें और ढक्कन लगाकर १०-१५ मिनट के लिए रख दें। हथेली पर तेल लगाकर उस आटे को मसलें, फिर उसके ऊपर गीला कपड़ा रखकर ढक दें।

एक कड़ाही में गुड़ और नारियल डालकर गैस पर रखें। धीमी आँच पर तब तक पकाएँ जब तक कि वह हलका सुनहरी रंग का हो जाए। इलायची पाउडर मिलाकर गैस से नीचे उतारें और ठंडा करने के लिए रखें। गुने हुए आटे के १०-१२ गोले बनाएँ, वे हाथ पर पूरी की तरह फैलाएँ और उसमें बनाया हुआ मिश्रण एक चम्मच डालें, उसे मोदक का आकार दें। इन बारह मोदक को इडली के सांचे में १०-१२ मिनट तक भाप में पकाएँ।



आपके उकड़ी मोदक तैयार हैं।

सूजी व नारियल के लड्डू

सामग्रीः सूजी- डेढ़ कप, किसा हुआ नारियल ३/४ कप, देसी घी ४ बड़े चम्मच, किशमिश २ बड़े चम्मच, काजू १५, शक्कर १ कप, इलायची पाउडर १/२ छोटा चम्मच।

विधिः एक कड़ाही में घी और सूजी डालकर धीमी आँच पर सेंके जब तक कि सूजी थोड़ी सी सुनहरे रंग की हो जाए। अब इसमें नारियल डालकर २-३ मिनट ज़्यादा सेंकें। दूसरे बरतन में शक्कर और आधा कप पानी डालकर मध्यम आँच पर गरम करें और तब तक पकाते रहें, जब तक एकतारी चाशनी बन जाए। इस में सूजी और नारियल का मिश्रण मिलाएँ। इस मिश्रण को गैस से उतार कर इलायची पाउडर डालकर, ढक्कन लगाकर करीब ३० मिनट तक रखें। बीच-बीच में इस मिश्रण को हिलाते रहें। इस मिश्रण के करीब १५ लड्डू बनाएँ। किशमिश और काजू डालकर सजाएँ।

स्वास्थ्य

बहुगुणी हरड़

रोगों को दूर कर शरीर को स्वस्थ रखनेवाली औषधियों में हरड़ सर्वश्रेष्ठ है। यह त्रिदोषशामक, बुद्धि, आयु, बल व नेत्र ज्योति वर्धक, व संपूर्ण शरीर की शुद्धि करती है। विभिन्न प्रकार से उपयोग करने पर हरड़ सभी रोगों को हरती है।



चबाकर खाई हुई हरड़ अग्नि को बढ़ाती है। पीसकर खाई हुई हरड़ मल को बाहर निकालती है। पानी में उबालकर खाने से त्रिदोषों का नाश करती है।

भोजन के पहले हरड़ चूसकर लेने से भूख बढ़ती है। भोजन के साथ खाने से बुद्धि, बल व पुष्टि में वृद्धि होती है। भोजन के बाद सेवन करने से अन्नपान-संबंधी दोषों को व आहार से उत्पन्न अवांछित वात, पित्त और कफ़ को तुरंत नष्ट कर देती है।

सेंधा नमक के साथ खाने से कफ़जन्य, मिश्री के साथ खाने से पित्तजन्य, घी के साथ खाने से वायुजन्य तथा गुड़ के साथ खाने से समस्त व्याधियों को दूर करने में मदद करती है।

हरड़ के प्रयोग

१) २ ग्राम हरड़ व २ ग्राम सोंठ के काढ़े में १० से २० मि.ली. अरण्डी का तेल मिलाकर सुबह सूर्योदय के बाद लेने से गठिया,सायटिका, मुँह का लकवा व हर्निया में खूब लाभ होता है।

२) हरड़ चूर्ण गुड़ के साथ नियमित लेने से वात रोग जिसमें उँगलियाँ तथा हाथ-पैर के जोड़ों में सूजन व दर्द होता है, नष्ट हो जाता है। इसमें वायुशामक पदार्थों का सेवन आवश्यक है।

३) उलटियाँ शुरू होने पर हरड़ का चूर्ण शहद के साथ चाटें। इससे दोष गुदामार्ग से निकल जाते हैं व उलटी शीघ्र बंद हो जाती है।

४) हरड़ चूर्ण गर्म जल के साथ लेने से हिचकी बंद हो जाती है।

५) शरीर के किसी भी भाग में फोड़ा होने पर गोमूत्र में हरड़ घिसकर लेप करने से फोड़ा पककर फूट जाता है, चीरने की आवश्यकता नहीं पड़ती। ●

आधुनिक हलचल



<u>हरिद्वार</u> -बाबा रामदेव ने संपूर्ण विश्व को योग के रंग में रंग दिया है। वे अब चीन में भी अपना पहला योग केंद्र खोलने वाले हैं। उनके अनुसार योग कोई धर्म नहीं है, यह तो अध्यात्म का एक विकल्प है। बाबा रामदेव ने एक आलीशान और भव्य जहाज वर्गो (Virgo) पर करीब १५ देशों से आए ९५० लोगों को योग तथा प्राणायाम की शिक्षा दी। यह शिविर लोगों के लिए एक अनूठी मनोरंजन यात्रा थी।

योग की शिक्षा धर्म और नियम के दायरे में नहीं बँधती है। उनके पतंजलि योगपीठ हरिद्वार में कई असाध्य रोगों पर अनुसंधान हो रहे हैं।

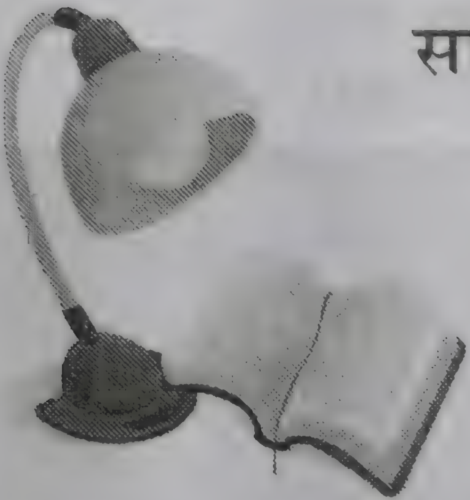
वे योग को दुनिया के अंतिम आदमी तक पहुँचाना चाहते हैं। कई बड़े-बड़े देशों में वह इस विद्या का प्रसार व प्रचार करना चाहते हैं ताकि मनुष्य बीमारियों और तनाव से मुक्त होकर एक निरोगी और आनंदपूर्ण जीवन जी सके।

<u>कविता द्वारा विज्ञापन</u>

भोपाल-बाज़ारवाद में हर चीज़ का विज्ञापन आज अनिवार्य हो गया है। जिस माल का विज्ञापन जितना ज्यादा होता है, उसकी बाजार में माँग उतनी ही ज़्यादा होने लगती है। इसीलिए मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में कविताओं के द्वारा विज्ञापन करने की शुरुआत की गई है। आज के दौर में कविताओं का अस्तित्व खत्म होता जा रहा है इसलिए इनको ज़िंदा रखने के लिए, उन्हें लोकप्रिय बनाने के लिए विज्ञापनों का सहारा लिया जा रहा है। यह सिलसिला आठ माह से कारगर सिद्ध हो रहा है।

<u>डेनमार्क में सबसे ज्यादा खुश रहने वाले लोग</u>

<u>वाशिंगटनः</u> एक सर्वे के मुताबिक डेनमार्क के लोग सबसे ज्यादा खुश रहते हैं। राजनीतिक तनावों से घिरे जिम्बवावे के देश इस सूची में सबसे नीचे हैं। ५२ देशों के सर्वेक्षण से यह सिद्ध हुआ है कि आज ४५ देशों के लोगों में खुश रहने की प्रवृत्ति बढ़ी है। ये देश हैं-भारत, आयरलेंड, मैक्सिको दक्षिण कोरिया आदि।



साहित्य मंथन

आखिरी परिचय, लेखक- शरत्चन्द्र, प्रकाशक- राजा पॉकेट बुक्स, ३३०/१ मेन रोड़ बुराड़ी, दिल्ली-११०८४, मूल्य- ६० रुपए

शरत्चंद्र की इस कृति में समाज के आदर्शवादी यथार्थ का वर्णन है। कुछ विषम स्थितियों में इस उपन्यास की नायिका सविता, जिसे नई माँ कहते हैं उसे अपने परम शांत धर्मभीरु पति ब्रजबाबू से अलग होना पड़ता है। इन दोनों की संतान रेणु अपने पिता के पास ही रह जाती है। ब्रजबाबू की संपत्ति हड़प करने के लिए रेणु की सौतेली माँ व मामा उसका विवाह एक पागल युवक से करना चाहते हैं। हल्दी की रस्म भी हो जाती है, परंतु सविता अपने पाले हुए बेटे राखाल और उसके मित्र तारकनाथ की सहायता से विवाह रद्द करवा देती है।

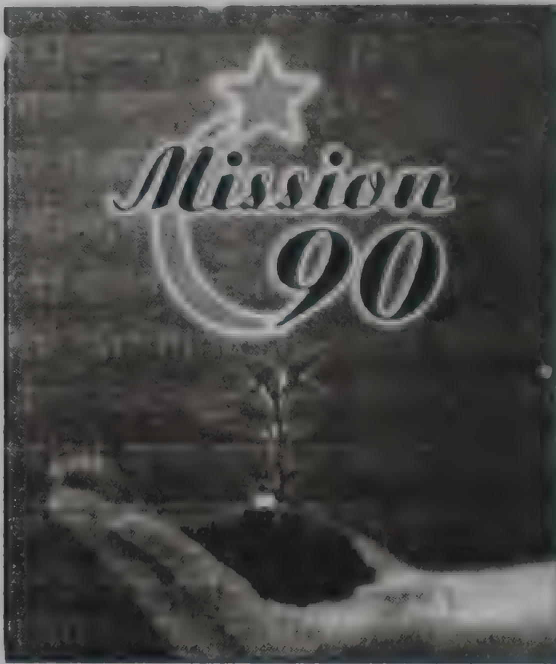
कालांतर में हालातों से लड़ते हुए जब ब्रजबाबू अपनी बेटी के साथ वृंदावन में जा बसते हैं तो वहाँ रेणु की मृत्यु हो जाती है और सविता स्वतः अपने गरीब, लाचार और निर्बल पति की सेवा का भार अपने कंधों पर ले लेती है। संबंधों की चुभन, लालच के खंजर और सामाजिक बंधनों के दलदल में फँसे पात्रों के अंतरद्वंद को सजीव कथा के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

ईदगाह, लेखक- मुंशी प्रेमचंद, प्रकाशक- राजा पॉकेट बुक्स, ३३०/१ मेन रोड़ बुराड़ी, दिल्ली-११०८४, मूल्य- ३० रुपए

यह भारतीय साहित्य जगत के एक महान लेखक मुंशी प्रेमचंद की जादूई कलम से लिखी गई बाल मनोविज्ञान पर आधारित एक बहुत ही हृदय स्पर्शी रचना है। अनाथ हामिद ईद के दिन अपने दोस्तों के साथ गाँव से दूर ईदगाह में नमाज़ पढ़ने जाता है। इसके अन्य साथियों के पास काफ़ी पैसे रहते हैं, अतः वे तरह तरह की चीज़ें खरीदते हैं, हामिद को चिढ़ाते हैं। हामिद के पास केवल तीन पैसे थे, उनसे वह अपनी दादी अमीना के लिए चिमटा खरीद लेता है, क्योंकि वह देखता है उसकी बूढ़ी दादी की उँगलियाँ रोज़ रोटी बनाते वक्त जल जाती हैं। वह अपने दोस्तों के सामने अपने चिमटे को उनके खिलौनों से बेहतर और ज़्यादा उपयोगी सिद्ध कर देता है।

दादी अमीना चिमटा पाकर एक बच्ची की तरह रोने लगती है, और नन्हा हमीद एक बुज़ुर्ग की तरह उनके आँसू पोंछता है। दादी के मुँह से दुआएँ निकलती हैं। •

युवा संघ (ब्रिज बिल्डर्स)



हमारे देश में कई असहाय और गरीब ऐसे हैं, जिनके दुःख और कष्टों की सीमा नहीं है, ज़िंदगी जिनके लिए एक अभिशाप है, मज़बूरी है, जो कई बार भूखे पेट सोने को मज़बूर हैं, जो पैसों के अभाव में सड़कों के किनारे बीमारी के कारण दम तोड़ने को मज़बूर हैं। वर्षा की बूँदें उनके शरीर को कंपा देती हैं, ठंड की ठिठुरन उनकी हड्डियों को जमा देती है। न उनके पास तन ढकने को कपड़े होते हैं, और न ही सर छुपाने को छत।

साधु वासवानी मिशन के युवा संघ (ब्रिज बिल्डर्स) के युवाओं ने इन्हीं असहाय और बदनसीबों के जीवन में रोशनी के दीप जलाने की कोशिश की है। ये युवा एक ऊँची आध्यात्मिक चेतना से भरे हैं और इस दुःखों से भरे समाज की सेवा को पूर्ण समर्पित हैं। इनके लिए जाति, धर्म का कोई बंधन नहीं है। इनका यह विश्वास है कि इस जीवन यात्रा में उच्च सेवा कार्य ही सुखद आश्रय प्रदान करता है।

इस संघ की नींव आदरणीय दादा जशन वासवानी ने मई १९९२ में रखी थी। १५ से ३५ वर्ष की आयु के ये युवा वृद्धाश्रम, अनाथालयों, मानसिक रुग्णालयों, अपंगशालाओं में जाकर उनकी हर तरह की सहायता करते हैं। ये झोपड़ियों और पशु-पक्षी गृहों में भी जाकर सेवा करते हैं। हर रविवार ये इन सेवाओं के लिए कई जगहों पर जाते हैं। ये दादा के साथ संवाद द्वारा अपना मार्गदर्शन पाते हैं।

आत्मा की शुद्धि और पोषण के लिए इनके द्वारा सत्संग और कीर्तन भी आयोजित किया जाता है, जिससे एक दिव्य अनुभूति प्राप्त होती है।

इनका जो लक्ष्य दादाजी द्वारा निर्धारित किया गया है, वह है सबके दुःखों के मरहम बनो, सहायक व ब्रिज बिल्डर बनो। मिशन ९० का उद्देश्य है कम से कम ९० परिवारों की इच्छापूर्ति करना और उन्हें गरीबी, भूखमरी, बीमारी और दुर्भाग्य के चंगुल से मुक्त करवाना। यही श्रद्धापूर्ण भेंट अपने गुरु दादा वासवानी के ९० वें जन्मदिन पर उन्होंने दी।

हम सभी की शुभ कामनाएँ इस शुभ संकल्प पर।

दादा जशन के ९० वें जन्मदिवस के जश्न की झलकियाँ

पुणे रविवार- २७ जुलाई

पूरा पुणे शहर उत्सव मना रहा था, दादा जशन के ९० वें जन्म दिन का। जगह जगह लगे होर्डिंग्ज पर निमंत्रण के आकर्षण से बंधे हज़ारों लोगों का झुंड बी.जे. मेडिकल ग्राऊंड के विशाल परिसर की ओर उमड़ उठा था।

एक सप्ताह तक चलने वाले इस बहुरंगी कार्यक्रम का आरंभ आनंद अखंड कीर्तन से हुआ। यह सुबह १० बजे शुरू हुआ जिसके मुख्य अतिथि थे श्री सुशीलकुमार शिंदे। सारा दिन चलने वाले इस अखंड कीर्तन में मिशन के गायकों के साथ ही इस्कॉन, आर्ट ऑफ लिविंग के साधकों ने भी अपने मधुर संगीत से सब लोगों का मन मोह लिया। शाम को अपनी भक्ति रस मे डूबी सुमधुर आवाज की मलिका अनुराधा पौडवाल ने इस तरह अपने गीत पेश किए कि हज़ारों लोग झूमने पर मज़बूर हो गए। इसके बाद दादा जे. पी. वासवानी ने हिंदी में अपना प्रवचन दिया जिसका संदेश था कि आप जो भी काम करें वह ईश्वर के लिए ही करें। हमेशा निष्काम भावना से काम करते हुए कहें.: हे प्रभु यह सब तेरे लिए है, सब तेरे लिए है। इस वक्त पुणे के विद्वान



पुलिस कमिश्नर डॉ सत्यपाल सिंह और उद्योगपति श्री मनु छाबरिया (फिनोलेक्स ग्रूप) भी मौजूद थे।

डॉ. सत्यपाल सिंह ने अपने भाषण में कहा कि जब दादा ने मुझसे कहा - ''आपके हाथों में पुणे बिलकुल सुरक्षित है।'' मैं सोचता हूँ कि यह मेरे लिए सबसे बड़ा आशीर्वाद है, इससे बड़ा आशीर्वाद तो कोई हो ही नहीं सकता।

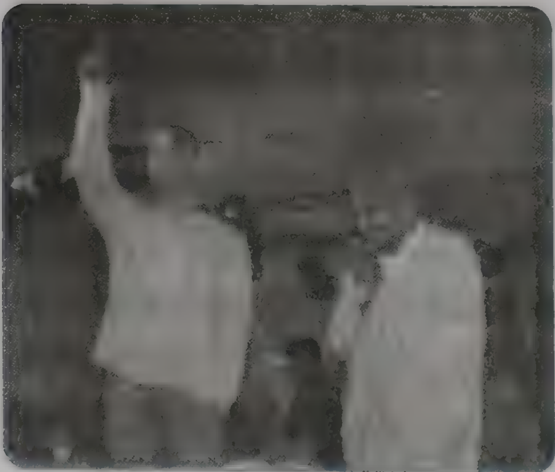
मनु छाबरिया ने कहा- दादा मैं तो बचपन से ही आपकी छत्रछाया में हूँ और रोज सुबह सोनी टी.वी. पर आपका एस.एम.एस मिल ही जाता है। बस सदैव इसी तरह आपकी कृपा बनी रहे, यही कामना है।

इसके बाद अखंड कीर्तन की धारा आधी रात तक श्री गौरव शास्त्री के संगीत के द्वारा बहती रही। श्री गौरव शास्त्री ने कहा- जो भी यहाँ मगन होकर नाचेगा उसके सारे

पाप कर्म धुल जाएँगे, और फिर क्या था...सारा सभा मंडप थिरकने लगा, दादा भी कहाँ पीछे रहने वाले थे। उन्होंनें भी थोड़ी देर तक नृत्य की मुद्राएँ बनाईं और प्रस्थान किया।

सोमवार २८ जुलाई- शाम ६ बजे ही पूरा सभा मंडप भर चुका था क्योंकि साधु वासवानी मिशन के जकार्ता सेंटर की ओर से एक संगीतमय नृत्य नाटिका की प्रस्तुति थी। इसमें भगवान विष्णु के नौ रूपों का वर्णन था। नाटिका इतनी मनोहर थी कि दर्शकों ने कई बार तालियाँ बजाईं। इस वक्त महाराष्ट्र और गोवा के गवर्नर श्री एस. सी. जमीर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

मंगलवार २९ जुलाई- सुबह १० बजे से पूरा परिसर हज़ारों बच्चों सहित अपने चहेते हीरोआमिर खान की राह में पलकें बिछाए बैठा था। 'तारे जमीन पर' फिल्म के जरिए सभी के दिलों पर छा जाने वाले इस अभिनेता को दादाजी ने स्टार नंबर



वन कहा। इसके बदले में आमिर बोले अब मैं शाहरूक खान से आगे हूँ और मैं यह मेडल हर एक को दिखाऊँगा। दादाजी एक बड़े चितचोर हैं, उन्होंने कुछ ही क्षणों में मेरा दिल चुरा लिया है। स्टेज पर आमिर की आंटी डॉ. नजमा हेपतुल्ल भी थीं जो एक बड़ी हार्ट सर्जन हैं। उन्होंने आमिर के बारे में कहा यह हमेशा इतना व्यस्त रहता है कि इसे ढूँढ पाना मुश्किल है, इसे कार्यक्रमों में या उत्सवों में जाना पसंद नहीं है। परंतु इस कार्यक्रम के लिए जैसे ही इससे पूछा गया यह तुरंत तैयार हो गया। आमिर खान ने स्वयं 'तारे जमीन पर' फिल्म के कई गाने बच्चों के साथ गाए और दादा को जन्मदिन की बधाइयाँ भी गाकर दीं।

शाम ६ बजे से रात ८ बजे तक शामक दावर संस्था द्वारा एक बहुत ही सुंदर नृत्य नाटिका का प्रदर्शन हुआ और आखिरी नाटिका में संत मीरा स्कूल के बच्चों ने भी भाग लिया। इस अवसर पर इन्फोसिस कंपनी के श्री नारायण मूर्ति की धर्मपत्नी श्रीमती सुधा मूर्ति प्रमुख अतिथि थीं, जिनका सन्मान दादाजी के हाथों हुआ।

बुधवार ३० जुलाई - इस दिन सुबह १० बजे साधु वासवानी मिशन की एक नई शाखा इन्स्टीटयूट ऑफ बिजनेस मॅनेजमेंट का शिलान्यास



भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति भारत रत्न डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के कर कमलों द्वारा हुआ। देश के इस महान वैज्ञानिक और शांति के मसीहा दादा का मिलन एक आध्यात्म और विज्ञान का मिलन था। दादा ने इनका स्वागत और सन्मान किया। डॉ कलाम ने अपने जीवन की उन्नति पर तीन माताओं का असर बताया, एक उनकी स्वयं की माँ जिन्होंने कई कठिन परिस्थितियों में पूरे परिवार का पालन और नेतृत्व किया। दूसरी माँ मदर टेरेसा जिसने हर दुःखी और बीमार में ईश्वर के दर्शन किए। तीसरी माँ एक तमिल कवयित्री श्रीमती सुब्रमण्यम से भी वे बहुत प्रभावित थे जिनकी १९१० में लिखी गई एक कविता उन्होंने सुनाई-

आज जागृत है भारत की हर नारी

अपने मूल्य उसने स्वयं बनाए हैं,

अपने लक्ष्य को पाने के लिए

उसने अपने आदर्श स्वयं बनाए हैं

इसके लिए वह अपनी जान पर भी खेलने को तैयार है।

उन्होंने कहा पिछले दिनों जब एक लड़की ने मुझसे बेंगलोर में एक सभा में पूछा था कि ''सर, मैं माईक्रोबायोलॉजी की विद्यार्थी हूँ, मैं अपने देश के लिए बहुत कुछ करना चाहती हूँ। आप ही बताइए कि मैं भ्रष्टाचार रहित समाज में रहने के लिए क्या करूँ?'' मेरा दिल सहम गया। एक छोटी बच्ची कोई शिकायत नहीं कर रही, सिर्फ़ भ्रष्टाचार रहित समाज में रहने की इच्छा बता रही है। मैंने कहा - इस भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए आप बच्चे ही प्रयत्न कर सकते हैं। आपके घरों में अगर दुर्भाग्य से भ्रष्टाचार है तो अपने माता पिता से प्रार्थना करें कि वे इसका त्याग करें।

आप जीवन में अपना लक्ष्य रखें और इस समाज को सुंदरता और मधुरता से भर दें। उस वक्त सभा में बैठे कुछ बच्चों ने कई प्रश्न किए, जिनके उत्तर उन्होंने बड़ी सुंदरता से देकर उनके मन की जिज्ञासा शांत की। ●

स्व. श्री किशुमल सखरानी की स्मृति में श्री नवीन व श्रीमती सिमरन सखरानी – सेंट थामस की ओर से यह पृष्ठ प्रस्तुत है।

नूरी वाणी

साधु वासवानी

खाक मिट्टी के हैं पुतले
जाएँगे इक दिन जग से अकेले।
दुनिया सारी है गुज़राना,
दो दिन रहना फिर पड़ेगा जाना।
मुसाफ़िरखाने का तू है मुसाफ़िर,
बँगला गाड़ी सब जाए छोड़कर।
नूरी निमाणी सब कुछ है छोड़ना,
माल खज़ाना संग न चलना।

बीच भँवर मेरी नैया डोले,
पर है यकीन तू इसे संभाले।
नैया पुरानी, तेज़ तूफ़ान,
पर मुझ पर तेरा है एहसान।
दासी पर कृपा है तेरी,
पार लगेगी नैया मेरी।
सद बलिहारी नूरी निमाणी
नाव पुरानी पर मुझे मिला है रहम रूहानी।

प्रकाशक - मोहन चैनानी, साधु वासवानी मिशन, १० साधु वासवानी पथ, पुणे - ४११ ००१
संरक्षक - साधु वासवानी मिशन, १० साधु वासवानी पथ, पुणे - ४११ ००१
संपादक - गुलशन दुदानी
मुद्रक - पी.व्हि. शेट्टी
मुद्रण स्थल - प्रिंट इंप्रेशन्स, १०१, रौनक इंडस्ट्रियल इस्टेट, १३१/७ बी, हड़पसर इंडस्ट्रियल इस्टेट
पुणे - ४११०१३



ऋषि पंचमी

श्रावण महीने की पूर्णिमा के बाद वैदिक काल में अन्य ग्रहों की आराधना के साथ-साथ उन महान ऋषियों की भी आराधना की जाती थी जो आकाश में सप्तऋषि मंडल के रूप में अवस्थित हैं। इनके नाम हैं कश्यप, अत्रि, भारद्वाज, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि और वशिष्ठ। भाद्रपद पंचमी के दिन इन ऋषियों की पूजा-अर्चना की जाती है।

गणेश चतुर्थी के अगले दिन हिंदू स्त्रियाँ पूरा दिन उपवास रखती हैं। दतुवन अर्थात दतौन की पूजा करती हैं, पवित्र नदी या कुएँ के जल से स्नान करती हैं और पवित्र जल से भरे कलश, अखंड दीपक और सप्तऋषियों की पूजा कर अखंड सौभाग्य का वर माँगती हैं।

RNI NO. MAHHIN/2006/18593
REGD NO.: LII/RNP/M/PNCE-46/2007-2009
POSTED AT GPO ON 28th OF EVERY MONTH

ऐसे कौन से लक्षण हैं, जिनसे हम आध्यात्मिक प्रगति की जाँच कर सकते हैं? जैसे-जैसे हम आध्यात्मिक उन्नति की ओर अग्रसर होते हैं... हमारे भाव, वाणी, विचार और शब्द अति कोमल, पवित्र और मधुर हो जाते हैं। हम मौन में गहरे उतरने लगते हैं।

—जे. पी. वासवानी